

आज का गौसम
बुधवार को आसमान साफ़ रहने के साथ शुद्धीली रूप से खाना बनाना है। न्यूनतम तापमान में प्रियोग के आसान है।

24.0° 10.0°
अधिकतम तापमान न्यूनतम तापमान
सूर्योदय 06:33 सूर्योत्सर 05:16

अनुराग हेल्प केयर प्रा.लि.
• ICU • NICU DIALYSIS
• MODULAR OT
दूरबीन विधि से आपरेशन
अब कम खर्च में
सीधीएचएस, मैडिकल व अयुष्मान कार्ड भारत
117/प्ल्यू/700,
शाहनार, कानपुर
9889538233, 7880306999

न्यूज ब्राफ



विकास राजपूत को मोनमयन पत्र सौंपते पंकज राजपूत।

अमृत विचार

अमृत विचार। जिलाधिकारी आशुतोष मोहन होती ने मंगलवार को मंडी निरीक्षक व सचिव अनुपस्थित पाए गए। जिलाधिकारी ने नारजगी जाते हुए दोनों पर कार्रवाई के निर्देश दिए। इसके साथ ही एक किसान की ओर से धान की तौल न होने की समस्या भी बताई गई। इस पर समस्या समाधान के निर्देश दिए।

मंडी समिति तिर्या में विपणन शाखा द्वारा दो धान खरीद केंद्र एवं एक जारा/मक्का खरीद केंद्र, कुल 3 क्रय केन्द्र खेले गए हैं। जिलाधिकारी अचानक पहुंचे तो मुख्य केंद्र प्रभारी राजेश कुमार मौजूद थे। वहीं मंडी निरीक्षक पुण्यलता व मंडी सचिव रघुराज प्रताप सिंह अनुपस्थित थे। इस पर जिलाधिकारी ने नारजगी व्यक्त करते हुए कहा कि खरीद केन्द्रों पर पारदर्शिता, समयबद्धता और



मंडी समिति तिर्या निरीक्षण धान खरीद केंद्र पर खरीद की जानकारी लेते जिलाधिकारी।

गमा देवी मंदिर में धर्म ध्वजा प्रतिष्ठापित

छिबरामऊ। मार्गशीर्ष शुक्रव शक्ष पंचमी यानी विवाह पंचमी के पावन अवसर पर भगवान श्रीराम के विवाह महोत्सव के साथ ही नगर के प्रसिद्ध शक्तिपीठ गमा देवी मंदिर में अभिजीत मुहूर्त में सनातन धर्म ध्वजा का भव्य प्रतिष्ठापन किया गया।

मंडी समिति तिर्या निरीक्षण धान खरीद केंद्र पर खरीद की जानकारी के साथ ही, इसलिए इसे विवाह पंचमी का पूर्ण युजारी पंडित बनारसी दास शास्त्री ने बताया कि सनातन धर्म में धर्म ध्वज का विशेष महत्व है। यह केवल मंदिरों तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि प्रत्येक सनातनी के घर पर भी लहरानी चाहिए। उन्होंने कहा कि आज ही के दिन भगवान श्रीराम का विवाह माता जनकी के साथ हुआ था, इसलिए इसे विवाह पंचमी कहा जाता है।

मंडी समिति तिर्या निरीक्षण धान खरीद केंद्र पर खरीद की जानकारी के साथ ही, इसे विवाह पंचमी के पश्चात मंदिर परिसर में सभी उपस्थिति श्रद्धालुओं को प्रसाद वित्तित किया गया। इस धार्मिक आयोजन में प्रमुख रूप से राजन लाल हिंदूवेदी, अरुण चतुर्वेदी, डॉ. हरी गर्ग, मुना गुप्ता (दाल वाले), सत्य सहदेव सिंह भद्रैरिया, धर्मेंद्र सिंह भद्रैरिया, अधिकारी त्रिवेदी, मुकेश मिश्रा, रवि तिवारी, सत्यनारायण वर्मा, प्रमोद शर्मा, उपस्थित रहे।

नारायणा हॉस्पिटल
सुपर स्पेशियलिटी - 1050 बेड सुसंजित अस्पताल
(इकाई नारायणा मेडिकल कॉलेज)
गंगागंग, पनकी कानपुर
द्वारा आयोजित

फ्री हेल्थ चेकअप केंप

18 नवम्बर से 31 दिसम्बर 2025 तक

स्थान: नारायणा हॉस्पिटल परिसर

समय: प्रातः 8 बजे से शाम 6 बजे तक

फोन करके अपना रजिस्ट्रेशन सुनिश्चित कर लें
Mob.: 7800007704, 7800007705

पंजीकरण के समय आधार कार्ड और रजिस्टर्ड मोबाइल नम्बर अवश्य लाएं

सभी विभागों द्वारा निश्चल परामर्श

अब हर रोगी की पहुंच में उत्तम सर्जरी, अच्छा इलाज, आधुनिक सुविधाएं युक्त सरकारी एवं किफायती दरों पर

अत्याधुनिक तकनीक और अनुभवी सर्जनों के साथ सभी प्रकार की सुविधा उपलब्ध

• सामान्य प्रसव	₹3,000
• ऑपरेशन विधि द्वारा डिलीवरी	₹10,000
• बड़े चौरे द्वारा बच्चेदानी का ऑपरेशन	₹15,000
• बिना चौरे द्वारा बच्चेदानी का ऑपरेशन	₹12,000
• दूरबीन विधि द्वारा ऑपरेशन	₹25,000
• दूरबीन द्वारा नसबंदी	₹5,000
• कॉल्पोस्कोपी	₹1,000

नाक, कान, गला का ऑपरेशन

• कान के पर्दे का ऑपरेशन	₹10,000
• कान के पर्दे + मास्टोइड का ऑपरेशन	₹12,000
• नाक की हड्डी सीधी करने का ऑपरेशन	₹10,000
• टॉन्सिल निकालने का ऑपरेशन	₹10,000
• साइनस का एंडोस्कोपी वाला ऑपरेशन	₹12,000
• सांस की नली में छेद बनाना	₹8,000
• जबड़े के नीचे वाली लारा ग्रंथि निकालना	₹10,000
• थायरोइड का ऑपरेशन	₹15,000
• मुँह की बायोप्सी + CECT जाँच	₹5,000

आर्थोपेडिक्स के प्रमुख ऑपरेशन

• फ्रैक्चर / जोड़ से संबंधित ऑपरेशन	• कूल्हा प्रत्यारोपण
• बड़े चौरे द्वारा बच्चेदानी का ऑपरेशन	• दूरबीन विधि से घुटने/कंधे के लिंगामेंट का ऑपरेशन
• निरीक्षण के लिए लिंगामेंट का ऑपरेशन	• कंधा प्रत्यारोपण
• बिना चौरे द्वारा बच्चेदानी का ऑपरेशन	• रीढ़ की हड्डी का ऑपरेशन
• साइनस का एंडोस्कोपी वाला ऑपरेशन	• स्लिप डिस्क
• सांस की नली में छेद बनाना	• रीढ़ की नसों का दबाव कम करने का ऑपरेशन
• जबड़े के नीचे वाली लारा ग्रंथि निकालना	• स्पोर्ट्स इन्जरी का ऑपरेशन
• थायरोइड का ऑपरेशन	• जन्मजात बच्चे में विकृतियां सुधार का ऑपरेशन
• मुँह की बायोप्सी + CECT जाँच	• लिंगामेंट टेन रिपेयर ऑपरेशन
• नाक ट्यूमर का ऑपरेशन	• हाथ-पैर के छोटे-छोटे जोड़ का ऑपरेशन
• दूरबीन द्वारा नसबंदी	• न्यूरो विभाग के ऑपरेशन

न्यूरो विभाग के ऑपरेशन

• ब्रेन ट्यूमर का ऑपरेशन	• दूरबीन प्रत्यारोपण
• दूरबीन विधि से घुटने/कंधे के लिंगामेंट का ऑपरेशन	• कंधा प्रत्यारोपण
• कंधा प्रत्यारोपण	• रीढ़ की हड्डी का ऑपरेशन
• रीढ़ की हड्डी का ऑपरेशन	• स्लिप डिस्क
• स्पोर्ट्स इन्जरी का ऑपरेशन	• रीढ़ की नसों का दबाव कम करने का ऑपरेशन
• जन्मजात बच्चे में विकृतियां सुधार का ऑपरेशन	• जन्मजात बच्चे में विकृतियां सुधार का ऑपरेशन
• लिंगामेंट टेन रिपेयर ऑपरेशन	• हाथ-पैर के छोटे-छोटे जोड़ का ऑपरेशन
• हाथ-पैर के छोटे-छोटे जोड़ का ऑपरेशन	• न्यूरो विभाग के ऑपरेशन

जनरल सर्जरी विभाग

• हाइड्रोसील	₹5,000
• चर्बी की गांठ	₹3,000
• मवाद की गांठ	₹3,000
• हर्मिया - (दूरबीन विधि से ऑपरेशन)	₹40,000
• हर्मिया - (चीरे से ऑपरेशन)	₹15,000
• पित्त की पथरी (दूरबीन से या चीरे से)	₹15,000
• एपेंडिक्स (दूरबीन या चीरे से)	₹15,000
• आंतों में सूखा	₹25,000
• आंतों में रुकावट	₹25,000
• पेशाब की थैली में पथरी का ऑपरेशन	₹12,000
• बवासीर, फिस्टुला (भगन्दर) का ऑ	

न्यूज ब्रीफ

कलश यात्रा



शादी का झांसा देकर बनाए शारीरिक संबंध
सुमेरपुर। कर्से की एक युवती ने बांदा जिले के एक युवक पर शादी का झांसा देकर 4 वर्ष तक शारीरिक शेषण करने और फिर शादी से मुकर जाने का मुकरमा दर्ज कराया है। युवती ने बताया कि 4 वर्ष पूर्व उसकी मुलाकात बांदा जनपथ के ऊपरा आपके लिए थी। शुभम ने शादी का झांसा देकर उसके साथ शारीरिक संबंध बनाए। अब शादी करने से मुकर रहा है। पुलिस ने तहरीर पर मुकरमा दर्ज कर आरोपी को जेल भेजा है।

बुधवार, 26 नवंबर 2025

जेटल जाइंट का जाना

धर्मेंद्र के निधन के साथ भारतीय सिनेमा का एक स्वर्णिम अध्याय माने समाप्त हो गया। एक महान अभिनेता का जाना, सबको उदास कर गया, क्योंकि यह उस संवेदनशील, सौम्य और करिश्मार्थ युग का अंत है, जिसने हिंदी फिल्म उद्योग को नई ऊँचाइयों तक पहुंचाया। धर्मेंद्र ऐसे अभिनेता थे, जिन्होंने छह दशकों तक न केवल परदे पर बल्कि दशकों के दिलों पर राज किया। उनके अभिनय और स्टारडम ने कई पीढ़ियों को आकर दिया। 60-70 के दशक में उभरते युवाओं के लिए वे एमरिमाय, विनम्र और सहज रोमांस के प्रतीक थे। इसके बाद 80 का दशक आपे-आपे जब भारतीय दर्शक एक ऐसे नायक की तलाश में थे जो ताकत, मासूमियत और भावनात्मकता का अद्वितीय संगम हो, वे एक्शन हीरो के बोतों रहे।

अनुपमा और हमराही जैसी फिल्मों में उनकी आँखों की गहराई और संवादों की सादगी रोमांटिक अभिनय का मानक बन गई। शोले में उनकी वीरू की भूमिका ने भारतीय सिनेमा को ऐसा चरित्र दिया, जो आज भी स्मृति और संस्कृति दोनों में जीवित है। इसी तरह युद्ध या धर्म-वीर जैसी फिल्मों में उनका तेज, ऊर्जा और प्रभावशीलता अद्वितीय रही। कामेंडी में भी उनका सहज हास्य कौशल, कॉमिक टाइपिंग, डम्पोवाइजेशन दर्शकों के लिए हमेशा याद रहेगा। सत्यकाम ऐसी फिल्म थी, जिसने उनके सादीय और कलात्मक अभिनय का लोहा मनवाया। इस पिल्लम में वे अपने किंदार की नीतिक दुविधाओं को जिस शांत गहराई से निपाते हैं, वह शायद ही किसी अभिनेता के लिए संभव हो। इसी तरह अनुपमा और चैरे की चांदनी में उनका संयंत्र अभिनय एक संवेदनशील की परिधाषा प्रस्तुत करता है। सिनेमा से बाहर किंतुकर धर्मेंद्र ने राजनीति में भी सरिय खुमिका निपाता है। वे भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर लोकसभा संसद बने। संसिद्ध समय के बावजूद उन्होंने अपने संसदीय क्षेत्र में सड़कों, जल प्रबंधन और स्थानीय स्वास्थ्य सेवाओं को सुधारने के लिए नियमित किया, हालांकि वे राजनीति में अपनी प्राकृतिक सहजता नहीं खोज पाए, पर उनकी नीतीय और कोशिशों में ईमानदारी झलकती थी। धर्मेंद्र महंत कुशल अभिनेता ही नहीं थे, वे केवल अत्यंत संवेदनशील, भावुक और मानवीय व्यक्ति थे। सह-कलाकारों की तकलीफ में साथ खड़े होना, नए कलाकारों को प्रोत्साहन देना और निजी जीवन में परोपकारिता जैसे गुण बताते हैं कि वे क्यों एक 'जेटल जाइंट' कहे जाते थे। उनकी विरासत बहुआयामी है। वे बैठकर एकत्र विविधता, निरंतरता और गुणवत्ता के प्रतीक थे, तो एक व्यक्ति के रूप में वे प्रेम, करुणा और गरिमा की मिसाल।

अनेक वाले यह समय में सिनेमा जब भी अपने इतिहास के गौवशाली अध्यायों को पलटते, धर्मेंद्र का नाम स्वर्णक्षणों में अकिञ्चित रहेगा। उनके किल्ली सफर, व्यक्तित्व और योगदान को देख अनेक काल तक याद रखेगा। हम सभी उन्हें भारतीय सिनेमा के उस अनोखे सिलारे के रूप में स्वीकृत हैं, जिन्होंने करोड़ों लोगों के लिए आनंद, प्रेरणा और संवेदन का संसार रखा। यह सच है कि धर्मेंद्र का जाना सिनेमा के एक युग का अंत है, पर उनके अभिनय, स्टारडम तथा अनुरूप व्यक्तित्व की चमक हमेशा हमारे सिनेमा प्रेमियों के दिलों में बनी रहेगी।

प्रसंगवाद

'हीमैन' सियासत के परदे पर कभी न बन सका हीरो

धर्मेंद्र लगभग छह दशकों तक बॉलीवुड के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर रहे। उन्होंने शोले, सत्यकाम, चुपके-चुपके, फूल और परथर, बैद्दी जैसी अनेक फिल्मों में यादगार किंदार नियाए, पर सियासत की दुनिया में उनका सफर छोटा और किसी भी रूप में यादगार नहीं रहा। धर्मेंद्र 2004 का लोकसभा चुनाव राजस्थान के बीकानेर लोकसभा क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर लड़े और आपार से जीत ए। जिस शब्द से कभी सियासत की बात तक नहीं की, जो इंटरव्यू में भी कहता था कि 'मुझे तो बस किल्में बनानी और करना पसंद है', वही शब्द संसद पहुंच गया। जीत भी बड़ी शानदार मिली। कीरीब 60 हजार चौटी से, मार उन्होंने फिर कभी चुनाव नहीं लड़ा। राजनीति का उनका सफर यहीं खत्म हो गया।

दरअसल 2004 के लोकसभा चुनाव के बहुत राजीव थी। बाजपेही सरकार के अंतिम वर्ष थे। बीकानेर सीट पर पार्टी को एक ऐसा चेहरा चाहिए था, जो जाट बहुल इलाके में पकड़ रखता हो और जिसकी लोकप्रियता से काग्रेस का पुराना किला ढह जाए। जाट समुदाय में धर्मेंद्र का जटिलस्तर प्रभाव था। उनकी फिल्में गांव-गांव में हिट होती थीं। 'शोले' का चौर, 'चुपके चुपके' का डॉ. परमिल, 'यमला पगला दीवाना' का दोसी जीवन-ये किंदार विवरण के गांवों में आज भी जीता है। बीजेपी को लगा कि अगर धर्मेंद्र मैदान में उतर आए तो जीत पकड़।

खुद धर्मेंद्र ने कई इंटरव्यू में बताया कि उनके बहुत करीबी दोस्त, बीजेपी के तत्कालीन नेता और राजस्थान के बड़े नेता (नाम उन्होंने कभी सार्वजनिक नहीं किया) बार-बार आग्रह करते रहे। बोले, 'धर्म मजी, बस एक बार आ जाओ, इलाके के लिए बहुत कुछ कर सकते हो।' पहले तो उन्होंने साफ मना कर दिया। कहा, 'मैं तो फिल्मों का आदमी हूं, मुझे ये सब नहीं आता।' मगर दोस्तों ने जिर पकड़ ली। अंत में धर्मेंद्र मान गए। शर्त सिर्फ एक थी, ज्यादा प्रचार नहीं करना पड़ेगा, न ज्यादा भाषण देना पड़ेगे।

धर्मेंद्र का चुपके प्रचार देखने लायक था। जहां दूसरे नेता सुवह से रात तक गांव-गांव में चलता रहा और लौट आते। कभी जीप पर चढ़े होकर हाथ हिलाते, कभी मंच पर बैठकर मुस्कुराता। भाषण? वो भी दो-चार लाइन का। "भाइये-बहनों, मैं आपका अपना हूं। आपने मुझे फिल्मों में इतना घारा दिया। अब एक बार संसद में भेज दो।" बस। लोगों को भाषण नहीं, उनका चेहरा चाहिए था। गांव की औरते आशीर्वाद देने आते, बच्चे ऑटोग्राफ मांगते। एक बार तो किसी ने मंच पर चढ़कर कहा, 'हीमैन जी, बस एक डायलॉग बोलो।' और धर्मेंद्र ने हसते हुए बोल दिया, 'कित्ता मजनूरू है।' पूरा मैदान तालियों से गूंज उठा।

संसद में धर्मेंद्र बहुत सक्रिय करीब 60-65 रुपी, जो उस समय के कई सोलेब्रिटी सांसदों से बहुत थी, लेकिन आप सक्रिय सांसदों से कम। उन्होंने 20-25 साल ही छूटे।

ज्यादातर सावल बीकानेर के पानी, सड़क, बिजली और किसानों की समस्याओं से जुड़े थे। वो भी लिखित में। मौखिक बहस में वो शायद ही कभी बोले हो। एक बार तो सदन में हंसी का माहौल बन गया, जब स्पीकर ने उनका नाम पुकारा और धर्मेंद्र जी उठे नहीं। बाद में पता चला कि वो शूटिंग के लिए मुंबई चले गए थे। विपक्ष ने खुब चुटकी ली, लेकिन जनता को इसपर कोई फर्क नहीं पड़ा। बीकानेर में लोग कहते थे, "हमारे सांसद नहीं हैं, बलन क्या जरूरी है?"



भीतर को बाहर के आक्रमण से बचाओ।
-रवींद्र नाथ टैगोर, साहित्यकार

नया एसआईएफ निवेशकों के लिए नया रास्ता



रजत मेहता
विदेशी एवं अर्थव्यवस्था

धर्मेंद्र के निधन के साथ भारतीय सिनेमा का एक स्वर्णिम अध्याय माने समाप्त हो गया। एक महान अभिनेता का जाना, सबको उदास कर गया, क्योंकि यह उस संवेदनशील, सौम्य और करिश्मार्थ युग का अंत है, जिसने हिंदी फिल्म उद्योग को नई ऊँचाइयों तक पहुंचाया। धर्मेंद्र ऐसे अभिनेता थे, जिन्होंने छह दशकों तक न केवल परदे पर बल्कि दशकों के दिलों पर राज किया। उनके अभिनय और स्टारडम ने कई पीढ़ियों को आकर दिया। 60-70 के दशक में उभरते युवाओं के लिए वे एमरिमाय, विनम्र और सहज रोमांस के प्रतीक थे। इसके बाद 80 का दशक आपे-आपे जब भारतीय दर्शक एक ऐसे नायक की तलाश में थे जो ताकत, मासूमियत और भावनात्मकता का अद्वितीय संगम हो, वे एक्शन हीरो रहे।

अनुपमा और हमराही जैसी फिल्मों में उनकी आँखों की गहराई और संवादों की सादगी रोमांटिक अभिनय का मानक बन गई। शोले में उनकी वीरू की भूमिका ने भारतीय सिनेमा को ऐसा चरित्र दिया, जो आज भी स्मृति और संस्कृति दोनों में जीवित है। इसी तरह युद्ध या धर्म-वीर जैसी फिल्मों में उनका तेज, ऊर्जा और प्रभावशीलता अद्वितीय रही। कामेंडी में भी उनका सहज हास्य कौशल, कॉमिक टाइपिंग, डम्पोवाइजेशन दर्शकों के लिए हमेशा याद रहेगा। सत्यकाम ऐसी फिल्म थी, जिसने उनके सादीय और कलात्मक अभिनय का लोहा मनवाया। इस पिल्लम हीरो के लिए वे एक्शन हीरो रहे।

धर्मेंद्र के निधन के साथ भारतीय सिनेमा की बात तक नहीं रही। उनके अभिनय और अभिनेता की गहराई और संवादों की सादगी रोमांटिक अभिनय का मानक बन गया। शोले में उनकी वीरू की भूमिका ने भारतीय सिनेमा को ऐसा चरित्र दिया, जो आज भी स्मृति और संस्कृति दोनों में जीवित है। इसी तरह युद्ध या धर्म-वीर जैसी फिल्मों में उनका तेज, ऊर्जा और प्रभावशीलता अद्वितीय रही। कामेंडी में भी उनका सहज हास्य कौशल, कॉमिक टाइपिंग, डम्पोवाइजेशन दर्शकों के लिए हमेशा याद रहेगा। इस पिल्लम हीरो के लिए वे एक्शन हीरो रहे।

धर्मेंद्र के निधन के साथ भारतीय सिनेमा की बात तक नहीं रही। उनके अभिनय और अभिनेता की गहराई और संवादों की सादगी रोमांटिक अभिनय का मानक बन गया। शोले में उनकी वीरू की भूमिका ने भारतीय सिनेमा को ऐसा चरित्र दिया, जो आज भी स्मृति और संस्कृति दोनों में जीवित है। इसी तरह युद्ध या धर्म-वीर जैसी फिल्मों में उनका तेज, ऊर्जा और प्रभावशीलता अद्वितीय रही। कामेंडी में भी उनका सहज हास्य कौशल, कॉमिक टाइपिंग, डम्पोव

रंगोली

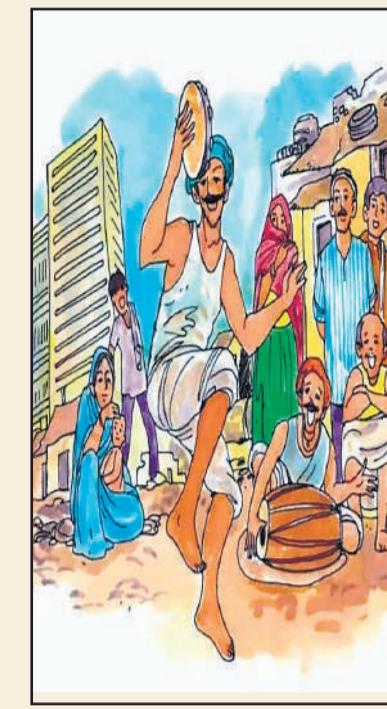
भारत की सांस्कृतिक धरोहर उसकी लोक परंपराओं में निहित है और लोकगीत इन परंपराओं की आत्मा माने जाते हैं। जैसे ब्रज, अवधी, बुद्देलखंड और भोजपुरी

की अपनी विशिष्ट लोकधारा है, वैसे ही उत्तर प्रदेश का कन्नौज क्षेत्र भी अपनी विशिष्ट कन्नौजी लोकगीत परंपरा के लिए प्रसिद्ध है। कन्नौजी बोली के अंतर्गत छह जिले फर्रुखाबाद, शाहजहांपुर, हरदोई, कानपुर, इटावा और पीलीभीत आते हैं। कन्नौजी में गाए जाने वाले ये गीत न केवल मनोरंजन के साधन हैं, बल्कि ग्रामीण जीवन, भावनाओं, संस्कारों, रीति-रिवाजों और सामाजिक संबंधों का सजीव दस्तावेज भी हैं।

डॉ. प्रशांत अमिनोत्री
निदेशक, रुद्रलखंड शैक्षणिक संस्थान, शहजहांपुर



भाग्यात्मक और प्रेमपरक गीत
कन्नौजी लोकगीतों में प्रेम, विहँ और सौंदर्य की भावनाएँ भी प्रमुखता से मिलती हैं। मेरा रेशमी दुपट्ठा जरा गोटा लगादो/ जरा गोटा लगादो... सोने की थाली में भोजन बनाए/ मेरा जेमन वाला दूर बसा/ कोई जलदी बुला दो... कभी ये गीत सीधी सच्ची प्रेमाभिव्यक्ति होते हैं,



तो कभी सांकेतिक और रूपकात्मक। स्त्री का विहँ, पति को प्रतीक्षा, सजन की विदाई-ये सब विषय बार-बार आते हैं।

साउन लागे आज सुहावन जी। / एजी कोइ घटा दबी हई कोरा। / नन्ही-नन्ही बुद्धियन मेंह बरसी रहे। / एजी काइ पवन चले सर्झजोर। ऐसे गीतों में भाषा की मिठास और भावनाओं की हारहाई दोनों अद्भुत रूप से मिलती हैं।

सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व

कन्नौजी लोकगीतों के बेल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज की सामूहिक चेतना के दर्शक हैं। इन गीतों से समाज की संरचना, नारी की भूमिका, नैतिक मूल्यों और लोकाचारों की ज़िलक मिलती है। इनके माध्यम से लोकसंस्कृति पीढ़ी-दी-पीढ़ी स्थानांतरित होती रही है। महिलाओं के लिए ये गीत स्व-अभिव्यक्ति का साधन हैं - वे अपनी भावनाएँ, पीढ़ा, आनंद और आकंक्षाएँ इन्हीं गीतों में व्यक्त करती हैं।

स्व-अभिव्यक्ति का एक उदाहरण देखें, जिसमें सुसुराल की पीढ़ा भी अभिव्यक्त होती है-

हमारी गुलाबी चुनरिया, हमें लागी नजरिया। / सासु हमारी जन्म की बैरिन। / हमसे करामैं रसुद्दिया, मेरी बारी उमरिया। / जेटानी हमारी जन्म की बैरिन। / हमसे भरामैं गणरिया, मेरी बारी उमरिया...

इस प्रकार कह सकते हैं कि कन्नौजी लोकगीत उत्तर भारत की समृद्ध लोकपंथरा का अभिन्न हिस्सा है। इन गीतों में जीवन की गंध है, मिट्टी की महक है और इंसान की सहज भावनाओं की सच्चाई है। आज जब आधुनिकता और तकनीक के प्रभाव से लोकसंगीत का स्तर क्षीण हो रहा है, तब इन लोकगीतों का संरक्षण अत्यंत आवश्यक है। कन्नौजी लोकगीत न केवल कान्यकुञ्ज क्षेत्र की पहचान हैं, बल्कि भारतीय लोक संस्कृति की जीवंत धरोहर भी हैं। इन गीतों को सुनना, गाना और सहेजना हमारी सांस्कृतिक जिम्मेदारी है।

कन्नौजी लोकगीतों की उत्पत्ति और विशेषता

कन्नौजी लोकगीतों की जड़ें प्रामाण समाज की मिट्टी में गहराई तक पैठी हुई हैं। ये गीत किसी एक कवि या लेखक की रचना नहीं, बल्कि जनजीवन के अनुभवों का सामूहिक रूप है। पीढ़ी दर पीढ़ी सुनकर और गाकर इनका रूप विकसित होता रहा है। इन गीतों में न तो व्यापासाधिकता है, न कृत्रिमता, ये लोकमन की सहज अभिव्यक्ति हैं। भाषा में मुड़ कन्नौजी लहजा, सरलता और हास्य-विनोद का पूर्ण इन्हें विशिष्ट बनाता है। कन्नौजी लोकगीतों की एक विशेषता यह भी है कि ये जीवन के प्रत्येक अवसर से जुड़े होते हैं - जन्म से लेकर मृत्यु तक, हर्ष और विषाद दोनों ही स्थितियों में लोकगीत गाए जाते हैं। मांगलिक अवसरों के गीत कन्नौजी बोली के क्षेत्र में संस्कार गीतों का अपना महत्व है। प्रमुखता यहां पांच प्रकार के संस्कार गीत प्राप्त होते हैं - जन्म गीत, अन्न प्राशन गीत, मुंडन गीत, यज्ञोपवीत गीत और विवाह गीत। पुरु जन्म के अवसर पर गाए जाने वाले गीतों को सोहर बनाए जाते हैं, वहीं मुंडन और अन्नप्राशन संस्कारों के अवसर पर भी सोहर गाने की परंपरा होती है। यज्ञोपवीत के समय गाए जाने वाले गीत बुरआ कहलाते हैं, जबकि विवाह के अवसर पर बनाए और बन्नी गाने का प्रचलन है। ये मांगलिक गीत अत्यंत लोकप्रिय हैं। ऐसे गीतों में मातृभाव, हंसी-ठिठोली और भावुकता का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है।

कृषि और श्रम जीवन से जुड़े गीत

कन्नौजी समाज का जीवन मूलतः कृषि आधारित है, इसलिए खेती-बाड़ी, वर्षा, फसल कटाई, बैल और हल से जुड़े अनेक गीत मिलते हैं। ये गीत खेतों में काम करते समय गाए जाते हैं, जिससे श्रम का बोझ हल्का होता है और सामूहिकता की भावना बढ़ती है।

बरखा आई ओरे साथी, बड़ठे न अब घर मा। / खेतन में पानी भरि आयो, चलो लगावई धान। ऐसे गीतों में किसान की मेहनत, आशा और प्रकृति के प्रति आदर झलकता है।

त्योहार और धार्मिक लोकगीत

कन्नौजी लोकगीतों में त्योहारों का बड़ा महत्व है। होली, दिवाली, रक्षाबंधन, तीज, करवाचौथ आदि पर्वों पर विशेष लोकगीत गाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त कन्नौजी क्षेत्र के मुख्य व्रत न्योहारों में शीतलाष्टमी, रामनवमी, वटसावित्री व्रत, नागपंचमी, जन्माष्टमी, हल षष्ठी, हरतालिका तीज, गणेश चतुर्थी, अनंत चौदस, लक्ष्मी व्रत, नवरात्रि का व्रत, विजय दशमी, करवाचौथ, अन्नकृत, ब्रातृद्वितीया, मकर संक्रान्ति, वरसंत पंचमी, शिवरात्रि व बोली हैं। इसके अतिरिक्त इस क्षेत्र में पूर्णिमा का भी महत्व है। इन विविध पर्वों पर कन्नौजी भाषा में विविध लोकगीत गाए जाते हैं। एक कन्नौजी लोकगीत दीखेए, जिसमें देवी मां की भक्ति नूजाने जाती है और बीच में ही बदरिया आती है। एक दम अंधिरिया छा जाती है - सोने के थारी में भोजन परोसे/ मझैये मिलन हम आईरे, झुकि आई अंधिरिया। मझैये रचाउन हम आईरे, झुकि आई अंधिरिया।

सोहर और बन्जी
सोहर-धीरे-धीरे रेडियो बजाना मेरे राजा जी। / रेडियो की आवाज सुन सासु दौड़ी आवें। / उनको भी हलके से कंठन बनवाना मेरे राजा जी। / पाच के बनवाना पचास के बताना जी। / धीरे-धीरे रेडियो बजाना मेरे राजा जी।
एक बन्नी - बन्नी नादान बजावे हरमेनिया/दादी के कमरे बजावे हरमेनिया। / छेड़े तान हंसे सारी दुनिया/ बन्नी नादान हंसे सारी दुनिया। महिलाएँ समूह में बैठकर इन गीतों को गाती हैं और उनमें स्थानीय शब्दावली, पारिवारिक संवर्धनों और ग्रामीण जीवन के प्रतीक झलकते हैं।



आर्ट गैलरी

मकबूल के घोड़े

मकबूल फिदा हुसैन के सबसे आइकॉनिक मोटिफ्स में घोड़ों को बनाना शामिल है, जो भारतीय कल्चर में गहरा सिंबोलिज्म रखते हैं। हुसैन की पेंटिंग्स में, घोड़ों को तेजी और एनर्जी के साथ दिखाया गया है। बोल्ड, एक्स्ट्रैपट रूपों में जो मूवमेंट और जिंदादिली का एहसास करते हैं। ये चित्रण सिर्फ दिखाने से कहीं आगे जाते हैं और भारतीय समाज और संस्कृति के अलग-अलग पहलुओं को दिखाते हुए, सिंबल के दायरे में जाते हैं। हुसैन के घोड़ों की पेंटिंग्स का एक मतलब यह है कि वे आजादी और ताकत का प्रतीक हैं, जो कलाकार की आजादी और खुद को जाहिर करने की अपनी इच्छा को दिखाते हैं।



पेंटर मकबूल फिदा हुसैन

रंग-तरंगा

राजधानी दिल्ली में सालभर विशेष कार्यक्रमों और प्रदर्शनियों का आयोजन होता रहता है। बीते दिनों जहां भारत मंडपम में भारतीय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला चल रहा है, वहीं निजमुद्दीन दरगाह के करीब बने हुमायूं टॉम्ब की सुंदर नरसी में जीवंत शिल्प ग्राम और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है। महोत्सम में लोक एवं जनजातीय कला एवं शिल्प महोत्सव में देश के विभिन्न राज्यों से आए शिल्पकारों ने अपनी कला के प्रदर्शन से लोगों का मन मोह लिया।



सुंदर नरसी में जीवंत शिल्प ग्राम की झलक:
सुंदर नरसी, दिल्ली का मुगल उद्यान है। जिसे अब एक जीवंत स्थल में बदल दिया गया है। यहां शिल्प बाजारों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और बैठकों के आयोजन होता है। यह सिर्फ एक पिकनिक स्थल नहीं, बल्कि अब यहां विभिन्न प्रकार की सांस्कृतिक गतिविधियां होती हैं, जिनमें "शिल्प ग्राम" भी शामिल है।

कर्फ रात्रीय पुरस्कार विजेता कारीगर भी पहुंचे:

प्रदर्शनी में शिल्प कला क्षेत्र के रात्रीय पुरस्कार विजेता कारीगर मधुबनी चित्रकला, वरली चित्रकला, टेराकोटा शिल्प, बांस शिल्प, सुलेख, सिक्की वास बुनाई, सुलेख - लकड़ी की नक्काशी और पेपरम

जनविश्वास विधेयक के परकर रहे काम : गोयल

नई दिल्ली, एजेंसी

केंद्रीय मंत्री ने कहा- छोटे कारोबारी अपराधों को और अपराध-मुक्त करने का प्रयास जारी

एक देश, एक लाइसेंस के मुद्दे पर मांगी रूपरेखा

गोयल ने सुनाव दिया कि व्यापारी समूदाय और ज्ञाना प्रवाहन की पहचान करे और मंत्रालय को उसकी जानकारी दे। व्यापारियों द्वारा उत्तराधीन करने के लिए शुल्क युद्ध और किसी भी पंजी निकासी के प्रमुख जोखिम को जिम्मेदार ठहराया था। रेटिंग एजेंसी का मानाना है कि वित्त वर्ष 2025-26 की वृद्धि दर के लिए जोखिम समान रूप से संतुलित है। एजेंसी ने कहा कि जनविश्वास भारत-अमेरिका व्यापार समझौते के तीसरे संस्करण के जरूरी छोटे कारोबारी अपराधों को और अपराध-मुक्त करने के लिए काम करना शुरू कर दिया है। उन्होंने कहा कि उनके लिए जिम्मेदारी देखने की जगह बनाए रखने के लिए अधिक वृद्धि बहुत जरूरी है। भारत पर अग्रसर, 2025 से जो शुल्क लगाया गया है, वह सबसे अधिक में से एक है। रेटिंग एजेंसी के मुख्य अर्थशास्त्री और सार्वजनिक वित्त मामलों के प्रमुख देवेंड कुमार पंत ने कहा कि जुलाई के अनुमान के बाद से आर्थिक वृद्धि दर घटने के लिए अधिक वृद्धि बहुत जरूरी है। भारत अभी करीब 3,900 अरब डॉलर के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के साथ वैश्विक व्यापार में भारत की जगह बनाए रखने के लिए अधिक वृद्धि बहुत जरूरी है। नागेश्वरन ने मंगलवार को आईडीपी ग्रीन रिटॉन्स सामिट-2025 के संबोधन करे हुए कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था मार्च 2025 के अंत में 3,900 अरब डॉलर थीं और वार्षिक वृद्धि में यह पहले ही 4,000 अरब डॉलर के अंकड़े को पार करने के लिए तैयार है।

केंद्रीय उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने मंगलवार को कहा कि उनके मंत्रालय ने जनविश्वास विधेयक के तीसरे संस्करण के जरूरी छोटे कारोबारी अपराधों को और अपराध-मुक्त करने के लिए काम करना शुरू कर दिया है। उन्होंने कहा कि उनके लिए जिम्मेदार ठहराया था। एजेंसी ने कहा कि जनविश्वास भारत-अमेरिका व्यापार समझौते विधेयक-3 की तैयारी चल रही है। जनविश्वास (प्रवाहन में संशोधन) विधेयक-2025, जो जीवन और व्यापार को आसान बनाने के लिए काम करने के लिए जारी कर दिया है। हालांकि अग्र मास में सुधार (उपायग्र और निवेश) अपेक्षा से कमज़ोर रहा, तो इससे राज्यीय वृद्धि दर में यह बदला जाएगा। जून तिमाही में अपेक्षा से अधिक तीव्र जीडीपी

दाला जा सकता है।

केंद्रीय उद्योग मंत्री घरेलू व्यापारियों

के सम्मेलन में कहा कि जनविश्वास

विधेयक-3 की तैयारी चल रही है।

जनविश्वास (प्रवाहन में संशोधन)

विधेयक-2025, जो जीवन और

व्यापार को आसान बनाने के लिए

कुछ छोटे अपराधों को अपराध-मुक्त

करने की कोशिश करता है, अग्र मास में लोकसभा में पेश किया गया था। इससे राज्यीय वृद्धि दर में यह बदला जाएगा।

और एक प्रवर यात्रा को भेजा गया था।

समिति को संसद के अगले सत्र

अपराध-मुक्त किया गया था।

के पहले दिन तक सदन में अपनी

रिपोर्ट जमा करने का काम संपूर्ण गया

है। इस कानून का पहला संस्करण

2023 में लागू किया गया था। इसमें

42 अधिनियमों के 183 प्रवाहनों में

संशोधन के जरूरी छोटे कारोबारी

को अपराध-मुक्त किया गया था।

के पहले दिन तक सदन में अपनी

रिपोर्ट जमा करने का काम संपूर्ण गया

है। इस कानून का पहला संस्करण

2023 में लागू किया गया था। इसमें

42 अधिनियमों के 183 प्रवाहनों में

संशोधन के जरूरी छोटे कारोबारी

को अपराध-मुक्त किया गया था।

के पहले दिन तक सदन में अपनी

रिपोर्ट जमा करने का काम संपूर्ण गया

है। इस कानून का पहला संस्करण

2023 में लागू किया गया था। इसमें

42 अधिनियमों के 183 प्रवाहनों में

संशोधन के जरूरी छोटे कारोबारी

को अपराध-मुक्त किया गया था।

के पहले दिन तक सदन में अपनी

रिपोर्ट जमा करने का काम संपूर्ण गया

है। इस कानून का पहला संस्करण

2023 में लागू किया गया था। इसमें

42 अधिनियमों के 183 प्रवाहनों में

संशोधन के जरूरी छोटे कारोबारी

को अपराध-मुक्त किया गया था।

के पहले दिन तक सदन में अपनी

रिपोर्ट जमा करने का काम संपूर्ण गया

है। इस कानून का पहला संस्करण

2023 में लागू किया गया था। इसमें

42 अधिनियमों के 183 प्रवाहनों में

संशोधन के जरूरी छोटे कारोबारी

को अपराध-मुक्त किया गया था।

के पहले दिन तक सदन में अपनी

रिपोर्ट जमा करने का काम संपूर्ण गया

है। इस कानून का पहला संस्करण

2023 में लागू किया गया था। इसमें

42 अधिनियमों के 183 प्रवाहनों में

संशोधन के जरूरी छोटे कारोबारी

को अपराध-मुक्त किया गया था।

के पहले दिन तक सदन में अपनी

रिपोर्ट जमा करने का काम संपूर्ण गया

है। इस कानून का पहला संस्करण

2023 में लागू किया गया था। इसमें

42 अधिनियमों के 183 प्रवाहनों में

संशोधन के जरूरी छोटे कारोबारी

को अपराध-मुक्त किया गया था।

के पहले दिन तक सदन में अपनी

रिपोर्ट जमा करने का काम संपूर्ण गया

है। इस कानून का पहला संस्करण

2023 में लागू किया गया था। इसमें

42 अधिनियमों के 183 प्रवाहनों में

संशोधन के जरूरी छोटे कारोबारी

को अपराध-मुक्त किया गया था।

के पहले दिन तक सदन में अपनी

रिपोर्ट जमा करने का काम संपूर्ण गया

है। इस कानून का पहला संस्करण

2023 में लागू किया गया था। इसमें

42 अधिनियमों के 183 प्रवाहनों में

संशोधन के जरूरी छोटे कारोबारी

को अपराध-मुक्त किया गया था।

के पहले दिन तक सदन में अपनी

रिपोर्ट जमा करने का काम संपूर्ण गया

है। इस कानून का पहला संस्करण

2023 में लागू किया गया था। इसमें

42 अधिनियमों के 183 प्रवाहनों में

संशोधन के जरूरी छोटे कारोबारी

को अपराध-मुक्त किया गया था।



आलेपिक में निराशा के बाद कड़ी महनत के लिए खुद को प्रेरित करना थोड़ा मुश्किल था। मैंने कुछ समय के लिए ब्रेक लेना, लेकिन यापासी पर भी मैं अच्छा प्रदर्शन नहीं कर सका था। मैं बहुत सी बीजों से सिनपट रहा था और फिर नहीं होने के बावजूद ट्रॉफीमेट्स में प्रतिष्ठायी कर रहा था।

- लक्ष्य जन, बैटमिंटन खिलाड़ी

हाईलाइट

जीत के साथ ऑस्ट्रेलियाई ओपन के क्वार्टर फाइनल में पहुंचे सुमित नागला

वैग़ू: भारत के शीर्ष एकल खिलाड़ी सुमित नागल ने वीन के मिगुइ झाँग को हाराकर ऑस्ट्रेलियाई ओपन एशिया पर्सीफिल वाइल्ड कार्ड लेआफ के क्वार्टर फाइनल में प्रवेश कर लिया। छठी वरीयत प्राप्त नागल ने 2-6, 6-0, 6-2 से जीत दर्ज की। नवंबर 24 से 29 तक होने वाले इस टूर्नामेंट में ऑस्ट्रेलियाई ओपन 2026 के मुख्य ड्रॉ के लिए पुरुष और महिला एकल विजेता को वाइल्ड कार्ड मिलेंगे। नागल को शुरुआत में वीन की वीजों लेने में दिक्कत आई और उनका आवेदन खरिज होने के बाद उन्हें वीनी अधिकारियों से सार्वजनिक तौर पर अपील करनी पड़ी।

स्पेन, जापान को जूनियर हॉकी विश्व कप में अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद

मदुरौ: दो बार की कास्य पदक विजेता स्पेन को जूनियर विश्व कप में अच्छे प्रदर्शन की योगी है और उनके कोच ने कहा कि टीम पूरी तरीके साथ उत्तरी है। स्पेन और अस्ट्रिया की टीमें महिला एकल को यहां पहुंची तो जापान और चिरी की टीमें बहुत पहुंची हैं। स्पेन के कोच अस्ट्रियालूपुर टीमों के विजित के बाद उन्होंने अस्ट्रिया की टीमें बहुत पहुंची हैं। स्पेन के कोच अस्ट्रियालूपुर टीमों के विजित के बाद उन्होंने अस्ट्रिया की टीमें बहुत पहुंची हैं। स्पेन के कोच अस्ट्रियालूपुर टीमों के विजित के बाद उन्होंने अस्ट्रिया की टीमें बहुत पहुंची हैं।

मंधाना के अकाउंट से शादी से पहले के पोस्ट गायब

नई दिल्ली: भारतीय महिला क्रिकेट टीम की स्टार बल्लेबाज़ सुमित मंधाना ने सगीतकार प्राप्त युवान के साथ अपनी शादी से पहले के जश्न से जुड़े सोशल मीडिया पोस्ट डिलीट कर दिया है। उनके पिता के अस्पताल में भर्ती होने से मुख्य समाजान् अनिश्चितकाल के लिए टाल गृहनगर संगती में शादी करने वाले थे। स्मृति के पिता के दिल की बीमारी से अस्पताल में भर्ती होने के बाद समारोह रोक दिया गया है। स्मृति और पलाश 23 नवंबर को महाराष्ट्र में इस क्रिकेटर के गृहनगर संगती में शादी करने वाले थे।

साइकिलिस्ट मीनाक्षी ने विविख खेलों का पहला स्वर्ण पदक जीता

जयपुर: एक नाक देव विधि की साइकिलिस्ट मीनाक्षी रोहिला ने महिला एकल सामाजिक रोलों को लेकर आश्वस्त भारत की बुधवार की आम सभा में आपैचारिक रूप से मंजूरी मिल जाएगी, जो देश की वैश्विक बहु-खेल केंद्र बनने की महत्वाकांक्षी योजना में मीलों का पथरथ सवित्र होगा। साइकिलिंग ने पदार्पण किया है और रोड स्पॉर्ट्स में वायसी कर रही 2022 एशियाई खेलों की टीम पर सुरुदृष्टि स्वर्ण की कास्य पदक विजेता मीनाक्षी ने पहला स्वर्ण पदक जीता।

राष्ट्रमंडल खेल 2030 : भारत की मेजबानी पर मुहर लगने की उम्मीद

नई दिल्ली, एजेंसी राष्ट्रमंडल खेल 2030 की मेजबानी हासिल करने को लेकर आश्वस्त भारत की बोली को बुधवार को गोपनीयों में राष्ट्रमंडल खेलों की आम सभा में आपैचारिक रूप से मंजूरी मिल जाएगी, जो देश की वैश्विक बहु-खेल केंद्र बनने की महत्वाकांक्षी योजना में मीलों का पथरथ सवित्र होगा।

भारत ने इससे पहले 2010 में दिल्ली में राष्ट्रमंडल खेलों का आयोजन किया था लेकिन 2030 में अनुभव बुधवारी द्वारा, प्राप्तानन्द और राष्ट्रमंडल खेल मूल्यों के साथ आयोजन किया जाएगा। इसने मेजबानी के दावेवार शहरों का तकनीकी वितरण, खिलाड़ियों के अनुभव, बुधवारी द्वारा, प्राप्तानन्द और राष्ट्रमंडल खेल बोर्ड की आयोजन किया जाएगा।

राष्ट्रमंडल खेल 2030 की मेजबानी के लिए भारत को नए स्तर तक पहुंचना चाहिए। बुधवार की आम सभा में अपने खेल द्वारों को नए स्तर तक बढ़ाव दिया जाएगा। इसने पिछले एक दशक

गुवाहाटी, एजेंसी



गुवाहाटी के बारसापारा रेटेडियम में भारतीय बल्लेबाज के आउट होने के बाद जश्न मनाते दक्षिण अमेरिका के खिलाड़ी।

जिस पिच की बल्लेबाजी के लिए अनुकूल प्रवृत्ति का दक्षिण अमेरिका के बल्लेबाज ने पूरा फायदा उठाया, उस पर भारतीय बल्लेबाज दूसरी पारी में भी जूते नहर आए। इससे उनकी टीम पर लक्ष्य आठ अंतिम टेस्ट क्रिकेट मैच में बड़ी हार का खत्तरा मंडराने लग गया है। दो मैच की शून्खला में पहले ही पौछे चल रहे भारत ने 549 रन के लगभग असंभव लक्ष्य का पौछा करते हुए मालवार को चौथे दिन का खेल समाप्त होने के बाद अपनी दूसरी पारी में 15.5 ओवर में दो विकेट पर 27 रन बनाए हैं और लक्ष्य तक पहुंचाने के लिए उसे अब 522 रन की जरूरत है।

दक्षिण अमेरिका में इससे पहले अपनी दूसरी पारी पांच विकेट पर 260 रन बनाकर समाप्त घोषित की गई। उसका आकर्षण ट्रिस्टन स्टेन स्टेन स्टेन की टीमें बहुत पहुंची हैं।

दक्षिण अमेरिका में इससे पहले अपनी दूसरी पारी पांच विकेट पर 260 रन बनाकर समाप्त घोषित की गई। उसका आकर्षण ट्रिस्टन स्टेन स्टेन की टीमें बहुत पहुंची हैं।

जिस पिच की बल्लेबाजी के लिए अनुकूल प्रवृत्ति का दक्षिण अमेरिका के बल्लेबाज ने पूरा फायदा उठाया, उस पर भारतीय बल्लेबाज दूसरी पारी में भी जूते नहर आए। इससे उनकी टीम पर लक्ष्य आठ अंतिम टेस्ट क्रिकेट मैच में बड़ी हार का खत्तरा मंडराने लग गया है। दो मैच की शून्खला में पहले ही पौछे चल रहे भारत ने 549 रन के लगभग असंभव लक्ष्य का पौछा करते हुए मालवार को चौथे दिन का खेल समाप्त होने के बाद अपनी दूसरी पारी में 15.5 ओवर में दो विकेट पर 27 रन बनाए हैं और लक्ष्य तक पहुंचाने के लिए उसे अब 522 रन की जरूरत है।

दक्षिण अमेरिका में इससे पहले अपनी दूसरी पारी पांच विकेट पर 260 रन बनाकर समाप्त घोषित की गई। उसका आकर्षण ट्रिस्टन स्टेन स्टेन की टीमें बहुत पहुंची हैं।

जिस पिच की बल्लेबाजी के लिए अनुकूल प्रवृत्ति का दक्षिण अमेरिका के बल्लेबाज ने पूरा फायदा उठाया, उस पर भारतीय बल्लेबाज दूसरी पारी में भी जूते नहर आए। इससे उनकी टीम पर लक्ष्य आठ अंतिम टेस्ट क्रिकेट मैच में बड़ी हार का खत्तरा मंडराने लग गया है। दो मैच की शून्खला में पहले ही पौछे चल रहे भारत ने 549 रन के लगभग असंभव लक्ष्य का पौछा करते हुए मालवार को चौथे दिन का खेल समाप्त होने के बाद अपनी दूसरी पारी में 15.5 ओवर में दो विकेट पर 27 रन बनाए हैं और लक्ष्य तक पहुंचाने के लिए उसे अब 522 रन की जरूरत है।

दक्षिण अमेरिका में इससे पहले अपनी दूसरी पारी पांच विकेट पर 260 रन बनाकर समाप्त घोषित की गई। उसका आकर्षण ट्रिस्टन स्टेन स्टेन की टीमें बहुत पहुंची हैं।

जिस पिच की बल्लेबाजी के लिए अनुकूल प्रवृत्ति का दक्षिण अमेरिका के बल्लेबाज ने पूरा फायदा उठाया, उस पर भारतीय बल्लेबाज दूसरी पारी में भी जूते नहर आए। इससे उनकी टीम पर लक्ष्य आठ अंतिम टेस्ट क्रिकेट मैच में बड़ी हार का खत्तरा मंडराने लग गया है। दो मैच की शून्खला में पहले ही पौछे चल रहे भारत ने 549 रन के लगभग असंभव लक्ष्य का पौछा करते हुए मालवार को चौथे दिन का खेल समाप्त होने के बाद अपनी दूसरी पारी में 15.5 ओवर में दो विकेट पर 27 रन बनाए हैं और लक्ष्य तक पहुंचाने के लिए उसे अब 522 रन की जरूरत है।

दक्षिण अमेरिका में इससे पहले अपनी दूसरी पारी पांच विकेट पर 260 रन बनाकर समाप्त घोषित की गई। उसका आकर्षण ट्रिस्टन स्टेन स्टेन की टीमें बहुत पहुंची हैं।

जिस पिच की बल्लेबाजी के लिए अनुकूल प्रवृत्ति का दक्षिण अमेरिका के बल्लेबाज ने पूरा फायदा उठाया, उस पर भारतीय बल्लेबाज दूसरी पारी में भी जूते नहर आए। इससे उनकी टीम पर लक्ष्य आठ अंतिम टेस्ट क्रिकेट मैच में बड़ी हार का खत्तरा मंडराने लग गया है। दो मैच की शून्खला में पहले ही पौछे चल रहे भारत ने 549 रन के लगभग असंभव लक्ष्य का पौछा करते हुए मालवार को चौथे दिन का खेल समाप्त होने के बाद अपनी दूसरी पारी में 15.5 ओवर में दो विकेट पर 27 रन बनाए हैं और लक्ष्य तक पहुंचाने के लिए उसे अब 522 रन की जरूरत है।

दक्षिण अमेरिका में इससे पहले अपनी दूसरी पारी पांच विकेट पर 260 रन बनाकर समाप्त घोषित की गई। उसका आकर्षण ट्रिस्टन स्टेन स्टेन की टीमें बहुत पहुंची हैं।

जिस पिच की बल्लेबाजी के लिए अनुकूल प्रवृत्ति का दक्षिण अमेरिका के बल्लेबाज ने पूरा फायदा उठाया, उस पर भारतीय बल्लेबाज दूसरी पारी में भी जूते नहर आए। इससे उनकी टीम पर लक्ष्य आठ अंतिम टेस्ट क्रिकेट मैच में बड़ी हार का खत्तरा मंडराने लग गया है। दो मैच की शून्खला में पहले ही पौछे चल रहे भारत ने 549 रन के लगभग असंभव लक्ष्य का पौछा करते हुए मालवार को चौथे दिन का खेल समाप्त होने के बाद अपनी दूसरी पारी में 15.5 ओवर में दो विकेट पर 27 रन बनाए हैं और लक्ष्य तक पहुंचाने के